موضوع الخطبة: مقتضيات الإيمان بالمصطفى صلى الله عليه وسلم

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/حفظه الله

لغة الترجمة: الهندية

المترجم : فيض الرحمن التيمي (@Ghiras_4T)

उपदेश का शीर्षकः

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने के तक़ाज़े

إن الحمد الله، نحمده ونستعينه،ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا،من يهده الله فلا مضل له،ومن يضلل فلا هادي له،وأشهد أن لا إله الإ الله وحده لا شريك له وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रशंसाओं के पश्चात!ऐ मुसलमानों!अल्लाह तआ़ला से डरो और उस्का भय रखो,उसकी अज्ञाकारी करो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जानलो के बंदों पर अल्लाह का यह कृपा है कि उसने उनके मध्य उनहीं में से एक संदेशवाहक भेजा जो उन्हें उसकी आयतें पढ़ कर सुनाता है और उनहें कुरान व ह़दीस सिखाता है। निसंदेह यह उस्से पश्चात खुली गुमराही में थे।पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने के पंद्रह तक़ाज़े हैंः

1—आप के नाम और वंशावली से अवज्ञत होना,आप का वशावली इस प्रकार हैःमोहम्मद बिन अबदल्लाह बिन अब्दुलमुत्तलिब बिन ह़ाशिम बिन अ़बदे मनाफ बिन क़ोसैय बिन क़ेलाब बिन मुर्रह बिन क़अ़ब बिन लोवैय बिन ग़ालिब बिन फहर बिन मालिक बिन अलनज़र बिन कनाना बिन ख़ोज़ैमा बिन मुदरिका बिन इलयास बिन मुज़िर बिन नज्ज़ार बिन अ़दनान।अ़दनान इसमाईल के वंश से थे और इसमाईल इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वंश से थे।इस समस्त वंशावली में आप का नाम पिता के नाम के साथ जनना भी प्रयाप्त है और वह इस प्रकार हैःमोहम्मद बिन अबदुल्लाह।और यह कि आप क़ोरैश जनजाति से संबंध रखते थे।

2– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का एक तक़ाज़ा यह है कि आप अपनी नबूव्वत (प्रवर्तन) के जिन प्रमाणों के साथ **मबऊ़स** (अवतरित) हुऐ,उन पर ईमान लाया जाऐ,जो कि अति अधिक हैं,उनमें सबसे बड़े प्रमाण यह हैः पवित्र कुरान का अवतरित होना,चांद का आपके ''ईशारे से'' दो टुकड़े होना,खोजूर की डाली का आपके प्रेम में बिलक बिलक कर रोना,आपके सामने खाने का तसबीह़ पढ़ना,आपकी **ऊंगली** के बीच से पानी का जारी होना,थोड़े से खाने का अधिक हो जाना और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का भविष्य के प्रति गैबी मामलों की खबर देना।

3– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का तक़ाज़ा यह है कि आपकी नबुव्वत (प्रवर्तन) व संदेशवाहन पर ईमान लाया जाऐ और इस पर ईमान लाया जाऐ कि आप अल्लाह की ओर से भेजे गऐ सत्य पैगंबर हैं।

4– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का तक़ाज़ा यह भी है कि आप के अंतिम पैगंबर और अंतिम रसूल होने पर ईमान लाया जाऐ,जैसा कि अल्लाह का कथन हैः

(مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ وَلَكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ)

अर्थातः(लोगो!) तुम्हारे **पुरुष** में से किसी के पिता मोह़म्मद नहीं किंतु आप अल्लाह के पैगंबर हैं और समस्त पैगंबरों को समाप्त करने वाले हैं।

ह़ज़रत सौबान रज़िअल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः''मेरी उम्मत में लगभग तीस झूटे (दावेदार) निकलेंगे,उनमें से प्रत्येक यह दावा करेगा कि वह नबी है,जब्कि में अंतिम नबि हूं मेरे पश्चात कोई (दूसरा)नबी नहीं होगा...'' (इस ह़दीस को **अबूदाऊद** (4252) और अह़मद 5/278 ने वर्णन किया है और अल्बानी ने सह़ी कहा है,इसी प्रकार''अलमुस्नद''के शोधकर्ताओं ने भी इसे मुस्लिम के शर्त पर सह़ी कहा है।)

ह़ज़रत जाबिर रजिअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः''मेरी और मुझसे पश्चात के समस्त रसूलों का उदाहरण ऐसा है जैसे ऐक व्यक्ति ने एक घर बनाया और उसमें हर प्रकार की सजावट का प्रबंधन किया किंतु एक कोने में एक ईंट की जगह छूट गई।अब समस्त लोग आते हैं और घर को चारों

ओर से घूम कर देखते हैं और आश्चर्य करते हैं किंतू यह भी कहते हैं कि यहां एक ईंट क्यों न रखी गई?तो में ही वह ईंट हूं और में अंतिम पैगंबर हूं''

(इसे बोखारी 3535 और मुस्लिम 2286 ने रिवायत किया है।)

5– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह है कि यह ईमान लाया जाए कि आप की लाई हूई शरीअ़त पूर्व के समस्त शरीअ़तों को निरस्त करने वाली और उनका रक्षक है,जैसे ईसा और मूसा अलैहिमुस्सलाम की लाई हूई शरीअतें,अल्लाह का कथन है:

(وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ)

अर्थात:हमने आपकी ओर सत्य के साथ यह पुस्तक अवतरित की है जो अपने से पूर्व पुस्तकों की पुष्टि करने वाली है और उनकी रक्षक है।

6– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान का तक़ाज़ा है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि आप के अवतरित होने के पश्चात अल्लाह तआ़ला के निकट इसलाम धर्म के सेवा कोई धर्म स्वीकृत नहीं,इसका प्रमाण अल्लाह तआ़ला का यह कथन है:

(وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ)

अर्थात:जो व्यक्ति इसलाम के अतिरिक्त और धर्म तलाश करे,उसका धर्म स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह आखेरत में हानी पान वालों में से होगा।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह ह़दीस भी इस का प्रमाण है:''क़सम है उसकी जिसके हाथ में मोह़म्मद(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)का प्राण है।उस काल का (अर्थात मेरे समय और मेरे बाद तक) कोई यहूदी अथवा ईसाई''अथवा और कोई धर्म वाला''मेरा ह़ाल सुने फिर ईमान न लाऐ उस पर जिस के साथ में भेजा गया हूं।(अर्थात कुरान) तो नरक में जाएगा''

(इसे मुस्लिम 153 ने अबूहोरैरा रज़िअल्लाहु अंहु से वर्णन किया है।)

7– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का तक़ाज़ा है कि इस पर ईमान लाया जाऐ कि आपने (अल्लाह के) संदेश को(संसार वालों तक)पहुंचा दिया और इसे पूरा कर दिया,और अपनी उम्मत को आलोकित राजमार्ग पर छोड़ कर (इस संसार से गऐ) इसका प्रमाण अल्लाह तआ़ला का यह कथन है:

(الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا)

अर्थात:आज मेंने तुम्हारे लिऐ धर्म को पूरा कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी करदी और तुम्हारे लिऐ इसलाम के धर्म होने पर राज़ी हो गया।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत में इसका प्रमाण वह ह़दीस है जिसे बोखारी व मुस्लिम ने मसरूक़ से रेवायत किया है,वह कहते हैं:में मोमिनों की माता आइशा रजिअल्लाहु अंहा के पास टेक लगा कर बैठा हुआ था,उन्हों ने कहा:ऐ अबू (पितो)आइशा! तीन चीजें ऐसी हैं कि उनमें किसी ने एक भी किया तो वह अल्लाह पर बड़ा आरोप लगाऐगा।उनमें से एक यह ज़िक्र(प्रार्थना)की कि–जिसने यह सोचा कि अल्लाह ने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जो चीजें उतारी हैं उनमें से कुछ चीजें मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने छिपा ली हैं। जबकि अल्लाह कहता है:

«يا أيها الرسول بلغ ما أنزل إليك من ربك»

'' जो चीज अल्लाह की ओर से तुम पर उतारी गई है उसे लोगों तक पहुंचादो''

(इसे बोखारी 4855 और मुस्लिम 177,286 ने रिवायत किया है और उपरोक्त श्बद मुस्लिम के हैं)

अबूज़र रज़िअल्लाहु अंहु से वर्णित है,वह फरमाते हैं: ''हमें मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस ह़ाल में छोड़ा कि आकाश में जो पंक्षि अपने पर फरफराता है,उस्के प्रति भी आपने हमें कोई न कोई ज्ञान अवश्य दिया''

(इसे अह़मद ने ''अलमुस्नद''5/153 में वर्णित किया है और ''अलमुस्नद''के शोधकर्ताओं ने इसे ह़सन कहा है)

सह़ाबा रजिअल्लाहु अंहु ने ह़ज्जतुलविदा में यह गवाही दी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसलाम के प्रचार का कर्तव्य पूरा कर दिया,उनकी संख्या लगभग चालीस हजार थी,जब पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे कहाःमें तुम्हारे समक्ष ऐसी चीज छोड़े जा रता हूं कि यदि तुम उसे बलपुर्वक पकड़े रहो तो कभी गुम्राह न होगे(वह है) अल्लाह तआ़ला की पुस्तक और तुमसे (क़यामत में)

मेरे बारे में प्रश्न होगा तो फिर तुम किया कहोगे?''

तो उन सबने कहा किःहम गवाही देते हैं कि निसंदेह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआ़ला का संदेश पहूंचाया और पैगंबरी का अधिकार पूरा किया और उम्मत का कलयाण किया।फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी तर्जनी(शहादत) की **ऊंगली** आकाश की ओर उठाते थे और लोगों की ओर झूकाते थे (अर्थात अपनी उंगली को **ऊपर** नीचे करते और लोगों की ओर ईशारा करते।ऐसा इमाम नौवी ने इस ह़दीस की व्याख्या में लिखा है।) और फरमाते थे कि ऐ अल्लाह!गवाह रहना, ऐ अल्लाह!गवाह रहना, ऐ अल्लाह!गवाह रहना,तीन बार (यही फरमाया और यूंही इशारा किया) 7(इसे मुस्लिम 1218 ने जाबिर रज़ीअल्लाहु अंहु से रिवायत किया है।)
8—पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का एक तक़ाज़ा यह है कि इस बात पर ईमान लाया जाऐ कि आप समस्त मनुष्य एवं जिनों के लिऐ पैगंबर बना कर भेजे गऐ थे,अल्लाह का कथन है:

(قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا)

अर्थातःआप कह दीजीऐ कि ऐ लोगो!में तुम सब की ओर अल्लाह की ओर से भेजा हुआ हूं।

अल्लाह ने और फरमायाः

(وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِلْعَالَمِينَ)

अर्थातःहमने आपको समस्त संसार वालों के लिऐ कृपा बना कर भेजा है।

सूरह अलजिन्न में इस बात का उल्लेख आया है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिनों को इसलाम की दावत दी,तो कुछ जिन्न आपके पास आऐ और

आपसे इसलाम की प्रतिज्ञा ली,इस संदर्भ में सूरह अलअह़क़ाफ की कुछ आयतें नाज़िल हूईं,जोकि यह हैं:

(وَإِذْ صَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْآنَ فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوا أَنْصِتُوا فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا إِلَى قَوْمِهِمْ مُنْذِرِينَ قَالُوا يَا قَوْمَنَا إِنَّا سَمِعْنَا كِتَابًا أُنْزِلَ مِنْ بَعْدِ مُوسَى مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ وَإِلَى طَرِيقٍ مُسْتَقِيمٍ يَا قَوْمَنَا أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِ يَغْفِرْ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ)

अर्थात:याद करो!जबकि हमने जिनों की एक टोली को तेरी ओर आकृशित किया कि वह कुरान सुनें,तो जब (पैगंबर के) पास पहुंच गऐ तो (एक दूसरे से) कहने लगे खामोश होजाओ,फिर जब पढ़ कर समाप्त हो गया तो अपने समूदाय को सूचत करने के लिए वापस लौट गऐ।कहने लगे ऐ हमारे समूदाय!हमने निसंदेह वह पुस्तक सुनी है जो मूसा(अलैहिस्सलाम) के पश्चात अवतरित की गई है जो अपने से पूर्व पुस्तकों की पुष्टि करने वाली है जो सत्य धर्म की और सत्य मार्ग की ओर मार्गदर्शन करती है।ऐ हमारे समुदाय!अल्लाह की ओर बोलाने वाले का कहा मानो,उस पर ईमान लाओ,तो अल्लाह तुम्हारे पापों को क्षमा प्रदान करेगा और तुम्हें पीड़ायुक्त यातना से शरण प्रदान कर देगा।

अल्लाह तआ़ला के आदेश के अनूसार पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने समस्त लोगों को इसलाम की दावत दी,सर्वप्रथम सबसे निकट परिजनों और परिवार वालों को इसलाम की ओर बोलाया,फिर अ़रब,फारस और रूम के राजाओं को पत्र लिखे,ह़बशा के राजा नज्जाशी को पत्र लिखा,जिनों को इसलाम की दावत दी,दावत के मार्ग को आसान करने के लिऐ ग़ज़वात''इसलामी युद्ध''किये,आपके पश्चात आपके सह़ाबा''साथी गण''आपके मार्गदर्शन पर चले,और उन्होंने भी अल्लाह की ओर बोलाने का कर्तव्य पूरा किया,कुरान व ह़दीस की सुरक्षा की,नासतिकों से युद्ध किया,नबूवत का दावा करने वालों से युद्ध किया,संसार भर में विजय का ध्वज लहराया,इस प्रकार सीरिया,मिस्त्र और मोराकश को प्राजित किया ख़ोरासान पर विजय का ध्वज लहराया,हर जगह तौह़ीद(एकेश्वरवाद/अद्वैतवाद) को प्रचलित किया,बुतों को ध्वस्त किया और इसलाम की सहायता व विजय के लिऐ अनमोल कार्य किये,जोकि इतिहास और ह़दीस की पुस्तकों में मौजूद है,अल्लाह उनपर रह़मत अवतरित करे और उन्हें

उच्च परिनाम प्रदान करे।उन्होंने और उनके पश्चात के वंशों ने जो अनमोल कार्य किये,सबको क़ियामत के दिन उनके पुण्य में शामिल फरमाऐ।

9– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का एक तक़ज़ा यह भी है कि इस बात पर ईमान लाया जाऐ कि आप का तरीक़ा सर्वोच्च तरीक़ा है,ह़ज़रत जाबिर रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने उपदेश में फरमाया करते थेः''प्रशंसाओं के पश्चात,सर्वोच्च बात अल्लाह की पुस्तक की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज(धर्म में) अविष्कार की गया नवाचार हैं और प्रत्येक नवाचार गुमराही है'' (इसे मुस्लिम 1218 ने ह़जरत जाबिर रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।)

10–– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का तक़ाज़ा यह भी है कि आप के अधिकारों को पूरे किये जाऐं, जिन में सर्वप्रथम आप की पुष्टि करना और आप के लाए हुऐ धर्म को मानना,इस प्रकार कि आपके आदेश को माना जाऐ और आपने जिन चीजों से रोका है उस्सा बचा जाऐ,इसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम करना भी आपके अधिकारों में से है।

11– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का तक़ाज़ा यह भी है कि आपके मनुष्य होने पर ईमान लाया जाऐ और इस बात पर कि आप अल्लाह के बंदे हैं जिनकी पूजा करना उचित नहीं,अनेक आयतों के अंदर भी इसको स्पष्ट किया गया है, **उदाहरण स्वरूप** सूरह इसरा में अल्लाह तआ़ला का यह कथन हैः

(سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى)

अर्थातः पवित्र है वह अल्लाह तआ़ला जो अपने बंदे को रात ही रात में मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़सा तक ले गया।

ह़ज़रत उमर रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है,वह कहते हैंःमेंने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुऐ सुनाः''मुझे मेरे **रुतबे** से अधिक ना बढ़ाओ (अर्थात मेरी प्रशंसा करने में।देखेंः(फतहुल्बारी)में उपरोक्त ह़दीस की व्याख्या।) जैसे ईसा बिन(पुत्र)मरयम अलैहेमा अलसलाम को ईसाइयों ने उनके **रुतबे** से अधिक बढ़ा दिया है।में तो केवल अल्लाह का बंदा हूं,इस लिये यही कहा करो(मेरे प्रति) कि में अल्लाह का बंदा और

उसका रसूल हूं''(इसे बोखारी (3445),अह़मद 1/23 और दारमी (2786) ने रिवायत किया है और उपरोक्त शब्द बोखारी ने रिवायत किया है।)
और अल्लाह ने अपने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमायाः

(قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُوحَى إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ)

अर्थातःआप कह दिजिये कि में तो तुम जैसा ही एक मनुष्य हूं।(हां)मेरी ओर **वह्य** की जाती है कि सबका प्रमेश्वर केवल एक ही अल्लाह है।

आपके मनुष्य होने पर ईमान लाने से यह अनीवार्य होजाता है कि इस बात पर ईमान लाया जाऐ कि आप और आपके अतिरिक्त अन्य समस्त अंबेया व रोसुल(संदेशवाहक गण)भी **रुबूबियत**

व **उलूहियत** के किसी भी गुन के मालिक नहीं हैं,अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी को यह आदेश दिया कि आप लोगों से कह दें:

(قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوءُ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ)

अर्थातःआप फरमा दीजिये कि में स्वयं ही अपने आप के लिऐ किसी लाभ का अधिकार नहीं रखता और न किसी हानी का,मगर उतना ही जेतना अल्लाह ने चाहा हो और यदि में गैब की बातें जानता होता तो में ढेर सारा लाभ प्राप्त कर लेता और मुझे कोई हानी न पहुंचती,में तो केवल डराने वाला और खुशखबरी देने वाला हूं उनलोगों को जो ईमान रखते हैं।

यह और इस जैसी अन्य आयतों से प्रमाणित होता है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक मनुष्य थे,और आप **रुबूबियत** व **उलूहियत** के किसी भी गुन के मालिक नहीं थे,आप न तो गैब का ज्ञान रखते थे,न संसार में कोई परिवर्तण कर सकते थे और न दोआऐं क़बूल करते थे,बल्कि हमारे जैसा अल्लाह के बंदे थे,किंतू अल्लाह ने आपको संदेशवाहन प्रदान किया था और यही स्थिति अन्य समस्त पैगंबरों कि भी थी।
12–पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का तक़ाज़ा यह भी है कि आप के समस्त मानवीय एवं नैतिक गुणों एवं विशेषणों पर ईमान लाया जाऐ,जैसे आप

की लंबाई,रूप,चाल ढाल,आपके चेहरे के गुण और आप की मानवीय सुंदरता,इसी प्रकार वे उच्च व्यवहार जो अल्लाह ने आपको प्रदान किया था और आपके अतिरिक्त किसी और के अंदर नहीं पाऐ गऐ,जैसे सच्चाई,अमानतदारी,कृपा व दया,परिजनों के साथ उच्च व्यवहार और क्षमा करना आदी,विद्वानों ने आपके मानवीय एवं नैतिक गुणों एवं विशेषणों के विश्य में अनेक पुस्तकें लिखी हैं।

14– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान का तक़ाज़ा यह भी है कि आपके अधिकार में जो व्यक्तिगत और धार्मिक गुण आऐ हैं,उनपर ईमान लाया जाऐ,व्यक्तिगत गुणों का उदाहरण नबवी छाप है,जो कि आप के बाऐं कंधे के पास मांस का उभरा हूआ भाग था,जो कबूतर के अंडे के बराबर था।

आप के व्यक्तिगत गुणों का एक उदाहरण यह भी है कि आपकी आंखें सोती थीं किंतु **ह्रदय** नहीं सोता था।

उसका उदाहरण यह भी है कि आपके शरीर से निकलने वाले पसीने और (मूंह से निकलने वाले)राल में अल्लाह ने बरकत पैदा फरमाया था।

रही बात आपके धार्मिक गुणों की तो इसके कुछ उदाहरण यह हैंःआपके विरासत (पैतृक सम्पति)का कोई हकदार नहीं,आप पर और आपके अहलेबैत (परिवार वालों) पर सदका(दान) ह़राम है,आपके लिऐ यह वैध था कि लगातार एक से अधिक रोज़ा रखें और बीच में इफतार न करें,आपको अल्लाह ने चार से अधिक विवाह की अनूमति दी थी,और उस महिला से आपको विवाह का विशेष अनूमति प्राप्त था जो अपने आपको आपके लिऐ हैबा (दान/समर्पित) करदे,इसी प्रकार आपका उसी स्थान पर दफन होना जहां आप का निधन हूआ,इनके अतिरिक्त और भी गुण हैं जो आपके लिऐ विशष हैं।

15– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का तक़ाजा यह भी है कि आपके मासूम होने पर ईमान लाया जाऐ,(शब्दकोश में इसमत का अर्थ होता हैःरोकना और रक्षा करना।देखेंः(लेसानुलअ़रब)आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पांच चीजों से मासूम थेः

1–आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम धर्म के प्रचार प्रसार में गलती,भूल चूक और (किसी बात को)छुपाने से मासूम थे,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन हैः

(وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَى إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَى)

अर्थात:वह अपनी इच्छा से कोई बात कहते हैं।वह तो केवल वहय होती है जो उतारी जाती है।

अल्लाह ने और फरमाया:

(يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ وَإِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُ وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ)

अर्थात:ऐ रसूल!जो कुछ भी आप की ओर आपके रब की ओर से नाज़िल किया गया है पहुंचा दिजीऐ।यदि आपने ऐसा न किया तो आप ने अल्लाह की रेसालत(संदेशवाहन)को अदा नहीं किया,और आप को अल्लाह तआ़ाला लोगों से बचालेगा।

2—आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मासूम होने का एक भाग यह भी है कि आप शिरक(बहूदेववाद) करने से मासूम थे,बेसत (संदेशवाहक) बनने से पूर्व भी आप शिरक से मासूम रहे,सत्य नोसूस (धार्मिक) पाठें इस बात पर साक्ष्य हैं कि आप ने कभी किसी प्रतिमा के सामने न तो सजदा किया,न उसे(आशीर्वाद के लिऐ) हाथ लगाया,और न इस जैसी कोई ऐसी शिरकिया (बहूदेववादीय) गतिविधि में भाग लिया जो आप के समुदाय के लोगों किया करते थे,आप अपने स्वभाव के अनूसार अल्लाह से अवगत थे,कई सालों तक गारे ह़िरा में जाकर अल्लाह की पूजा करते और उसकी पूजा में किसी को साझी नही ठहराते,आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अल्लाह तआ़ाला की इस तौह़ीद (एकेश्वरवाद)पे सिथिर रहना कोई आश्चर्य का विषय नहीं,क्योंकि अल्लाह तआ़ाला ने आपके अंदर से शैतान का भाग दो बार निकाला,प्रथम जब आप छोटे थे और द्वितीय जब आप बड़े होगऐ और आपके साथ शक्के सदर (सीना चीरने का) घटना हुआ।

3—आपकी इसमत (मासूम) होने का एक भाग यह भी है कि आप कबीरा गूनाहों (बड़े पापों)से मासूम थे, पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जीवनी इस पर साक्ष्य है,चाहे संदेशवाहन से पूर्व हो अथवा उसके पश्चात,क्योंकि आपने कभी शराब को मूंह न लगाया,न ही आपने कभी किसी महिला को हाथ लगाया,इस्से आगे बढ़ना तो दूर की बात,और न ही आपने कभी झूट बोला,जैसा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है:''में केवल सत्य ही बोलता हूं'',आपसे बड़े पाप केसे हो सकता था जबकि

आपने अपने सहाबा से कहाः''अल्लाह की क़सम!में तुममें सबसे अधिक अल्लाह से डरने और उसका तक़वा अपनाने वाला हूं''(इसे बोखारी5063 ने रिवायत किया है)

कुरतुबी रहीमहुल्लाह लिखते हैंःइस पर सभों की सहमति है कि अंबेया एकराम समस्त प्रकार के पापों के साथ उन छोटे पापों से भी मासूम थे जिनके अंदर अशलीलता पाई जाती है।

4—आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मासूमियत का एक भाग यह भी है कि आप जिस वंश से थे,वह वंश बलातकार से सुरक्षित था,अल्लाह तआ़ला ने हमारे नबी के वंश को पूर्व इस्लामी युग के बलातकार से सुरक्षित रखा था,चाहे वह पिता की ओर से हो अथवा माता की ओर से,आपका जन्म इस्लामी निकाह के तरीके पे आयोजित होने वाले निकाह से हूइा था।(ह़ाफिज़ ह़कमी की पुस्तक(मआ़रेजुल क़बूल)से हलके हेरफेर के साथ नकल किया गया है,अध्यायःमोलिदोहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम,पृष्ठ संख्या(1051),प्रकाशकःदारो **इब्नुलकय्यिम**, दम्माम।)

इसका प्रमाण पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह ह़दीस है जिसे इब्ने अब्बास रजीअल्लाहु अंहु ने रिवायत किया हैः''मेरे माता.पिता के बीच कभी अवैध संबंध न था,अल्लाह ने मुझे पवित्र कोख में पवित्रता के साथ मुनतकिल किया,जब भी दो डालियों (खानदानों) का आपस में संबंध हुआ तो में उनमें सबसे अच्छा था'' (इस ह़दीस को अबू नईम ने (दलाइलुन्नबूवत) :24 में विभिन्न माध्यमों से रिवायत किया है और सियूती ने (अलखसाइस अलकुबरा) :1/62,66 में इसके साक्ष्यों का उल्लेख किया हैः(हुकूक अलनबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अला उम्मतेहि) डाकटर मोह़म्मद बिन खलीफा अलतमिमी,प्रकाशकःमकतबा अजवाउलसलफ।रियाज़ः138)

15—आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मासूमियत का एक भाग यह भी है कि आप बुरे छवी से मासूम थे, पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उच्च चरित्र पर बात की जाऐ तो बात बहुत लेबी होजाऐगी,एतना कहना ही प्रयाप्त होगा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अंदर समस्त उत्तम व्यवहार पाऐ जात थे और आप समस्त बुरे चरित्र से पवित्र थे,इस विश्य में हमारे लिऐ अल्लाह तआ़ला का यह कथन प्रयाप्त है जिसके संबोधक पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैंः

(وَإِنَّكَ لَعَلَى خُلُقٍ عَظِيمٍ)

अर्थातःनिसंदेह आप बड़े''उत्तम चरित्र पर हैं।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने के यह पंद्रह तकाजे हैं,इन तकाजों पर ईमान लाने और इन पर अमल करने में अल्लाह हमारी सहायता करे,और हमें उनलोगों में शामिल फरमाऐ जिन्होंने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाया,आपकी सहायता की और उस आलोक की पैरवी की जिसके साथ आप भेजे गऐ थे,वही लोग सफल हैं।

अल्लाह तआ़ला कुरान की बरकतों से हमें और आप को लाभ पहुंचाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और ह़िकमतों पर आधारित प्रामर्शों ले लाभ पहुंचाए,में अपनी यह बात हकते हुए अल्लाह तआ़ला से आप सब के लिए समस्त प्रकार के पापों से छमा प्राप्त करता हूं,आप भी उस्से छमा प्राप्त करे,निसंदेह वह अति तौबा स्वीकारने वाला और छमा प्रदान करने वाला है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد:

आप यह भी जान लें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़ी चीज का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन हैः

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थातःअल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन हैः''तुम्हारे सबसे अचछे दिनों में से शुक्रवार का दिन है,उसी दिन मनु पैदा किये गऐ,उसी दिन उनकी आत्मा निकाली गई,उसी दिन सूर फूंका जाएगा,(अर्थात सूर में दूसरी बार फूंक मारा जाएगा,इस्का मतलब वह सूर है जिसमें इसराफील फूंक मारेंगे,यह वह देवदूत हैं जिनको सूर में फूंक मारने पर नियुक्त किया गया है,जिसके पश्चात समस्त मुर्दो अपनी कबरों से उठ खड़े होंगे।) उसी दिन चीख होगी।(अर्थात जिससे दुनयावी जीवन के अंत में लोग बेहोश होकर गिर पड़ेंगे और सब के सब मर जाऐंगे,यह बेहोशी उस समय उतपन

होगी जब सूर में बहली बार फूंक मारा जाऐगा,दो फूंक के मध्य में चालीस साल का अंतर होगा।) इसलिऐ तुमलोग उस दिन मुझ पर अधिक से अधिक दरूद भेजा करो,क्योंकि तुम्हारा दरूद मुझ पर प्रस्तुत किया जाता है''। (इसे नेसाई (1373), **अबूदाऊद** (1047),इब्ने माजा (1085) और अह़मद 4/8 ने रिवायत किया है और अल्बानी ने **सहीअबूदाऊद** में और मुस्नद के शोधकर्ताओं ने (ह़दीसः16162)के अंतर्गत इसे सह़ी कहा है।)

ए अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्माद पर रह़मत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़ेयामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट करदे,और अपने एकेश्वरवादी बंदों की सहायता फरमा।

हे अल्लाह तू हमें हमारे देशों में शांति प्रदान कर,हमारे इमामों और हमारे हाकिमों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक और हिदायत पर चलने वाला बना। उन्हें उनके प्रजाओं के लिऐ रह़मत बना दे।

हे अल्लाह!जो हमारे प्रति,इस्लाम और मुसलमानों के प्रति बुरा भाव रखे तू उसे खुद में ही वयस्त करदे,और उसके चाल व फरेब को उसके लिऐ बावले जान बना।

हे अल्लाह!मुसलमानों को जो कठिनाई पहुंची उसकी गंभीरता को तेरे सेवा कोई नहीं जानता,हे अल्लाह!हमसे इस कठिनाई को दूर फरमा दे,हम मुसलमान हैं,हे अल्लाह!इस महामारी से जिन लोगों का मृत्यु हो गया है,उन पर कृपा फरमा,और उनमें जो रोगी हैं,उन्हें स्वास्थ्य प्रदान कर,हे अल्लाह!हम तेरी पनाह चाहते हैं तेरी नेमत के समाप्ति से,तरे कृपा के हट जाने से,तेरे अचानक यातना से और तेरी प्रत्येक प्रकार की नाराजगी से।

हे अल्लाह हम तेरी पनाह चाहते हैं कुष्ठ रोग से,पागलपन से,कोढ़ से और बूरे रोग से।

हे अल्लाह हमें रमज़ान नसीब फरमा,हे अल्लाह हमें रमज़ान नसीब फरमा,हे अल्लाह हमें रमज़ान नसीब फरमा।

हे हमारे पालनहार!हमें नेकी दे और आखेरत में अच्छाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

ऐ अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला न्याय का,भलाई का और परिजनों के साथ उच्च व्यवहार का आदेश देता है और निर्लज्जता के कामों,ओछ गतिविधियों और अन्याय से रोकता है।वह खुद तुम्हें प्रामर्श कर रहा है कि तुम नसीहत प्राप्त करो।इस लिऐ तुम अल्लाह तआ़ला को याद करो,वह भी तुम्हें याद करेगा,उसके आशीर्वदों पर उनका आभार व्यक्त करो अल्लाह तुम्हें और दे़गा,निसंदेह अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र सबसे बड़ी चीज है,अल्लाह तुम्हारे समस्त आमाल से अवगत है।

लेखकः

मजिद बिन सुलेमान अलरसी

५ शाबान १४४२ हि़जरी

जूबैल, **सऊदी** अ़रब

अनुवादः

फैजुर रह़मान हि़फजुर रह़मान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com